वाड़ी विकास परियोजना

आम

वार्षिक कार्यक्रम कैलेण्डर

क्र.सं.	माह	किये जाने वाले कार्य

1 जनवरी (पौष-माघ)

पौधे का पाले से बचाव

- बगीचे मे पैाधो को पाले से बचाए, पौधे के उत्तरी व पश्चिमी तरफ घास लगाकर सुरक्षा करे।
- 1 वर्ष पुराने बगीचे मे प्रति पौधा 15 कि. ग्रा. सड़ा हुआ देशी खाद, 200 ग्राम सुपर फास्फेट (SP), 50 ग्राम म्युरेट आर्फ पोटाश (MOP) देकर गुडाई करें। यह मात्रा प्रति वर्ष इसी अनुपात में बढ़ाते रहे।

2 फरवरी (माघ-फाल्गुन)

पाउड्री मिल्डयू के लक्षण

- नया बगीचा स्थापना हेतु पौधे लगाये जा सकते है।
- सिंचाई 20 दिन में एक बार करें।
- पुराने बगीचे में पाउड्री मिल्डयू रोकथाम हेतु घुलनशील गंधक 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ घोल बनाकर स्प्रे करें। 20 दिन बाद पुनः दोहराये।

3 मार्च (फाल्गुन-चैत्र)

होपर कीट

- अच्छे सिचाई प्रबंधन होने पर नये पौधे लगाए जा सकते है।
- हर 15 दिन के अंतर पर पुराने बगीचे की सिंचाई करते रहे।
- भुनगा (होपर) कीट की रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफॉस का 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें। यही दवा 20 दिन बाद दुबारा स्प्रे करें ।

4 अप्रेल (चैत्र-वैशाख)

नये बगीचे की स्थापना हेतु 7 x 7 मीटर पर खड्डे

- नये बगीचे की स्थापना हेतु खेतों में 7 x 7 मीटर पर खड्डे बनाने हेतु वर्गाकार पद्धति से निशान लगाऐं व खड्डे खोदने का कार्य प्रारंभ करें। खड्डे 1 x 1 x 1 मी. आकार के बनायें।
- एक वर्ष पुराने बगीचे में प्रति पौधा 100 ग्राम युरिया व 50 ग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश दे। हर वर्ष इस मात्रा को बढाते हुये दे।
- पुराने स्थापित बगीचो में पौधो को तेज धुप से बचाव करें। प्रति सप्ताह सिंचाई करें।

5 मई (वैशाख-ज्येष्ठ)

दीमक का प्रकोप

मिली-बग

- नये बगीचे लगाने हेतु गड्डे खोदें। खोदे हुये खड्डों का दीमक उपचार हेतु खड्डे के भीतर चारों तरफ क्लोरपायरीफॉस दवा का स्प्रे करें।
- 2 मि. ली. दवा प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर खोदे गये गड्डो की भराई प्रारंभ करें।
- प्रति खड्डा देशी खाद 30 किलो, म्यूरेट ऑफ पोटाश 50 ग्राम, सिंगल सुपर फोस्फेट (SSP) 1 किलो डाले।
- पुराने बाग में मिली-बग नियंत्रण हेतु गहरी जुताई करें।
- 1 वर्ष पुराने पौधों को तेज धुप से बचाये तथा 7 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

6 जुन (ज्येष्ठ-आषाढ़)

नये पौधे

- खड्डे भरने का शेष कार्य पूर्ण करें।
- 1 वर्ष पुराने बगीचे में प्रति पौधा युरिया 100 ग्राम, म्युरेट ऑफ पोटाश 50 ग्राम देवे।
- 7 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।
- जुताई कर खरपतवार निकाले।

7 जुलाई (आषाढ़-सावन)

गमोसिस बीमारी

- वांछित पौधो की व्यवस्था करें।
- अच्छी बरसात होने पर खड्डों के मध्य में पौधे लगाऐं।
- पुराने बगीचे में गमोसिस (गोंद निकलना) बीमारी से बचाव हेतु कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें।

8 अगस्त (सावन-भाद्रपद)

थावले का निर्माण

- पौधे लगाने का कार्य सम्पन्न करें।
- आवश्यकता होने पर सिंचाई करे।
- पौधे के चारों तरफ थावला बनायें।

9 सितम्बर (भाद्रपद-अश्विन)

सिंचाई

- आवश्यकता होने पर सिंचाई करें।
- गमोसिस बीमारी से बचाव हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम प्रति लीटर के साथ मिलाकर स्प्रे करें।

10 अक्टुबर (अश्विन-कार्तिक)

खरपतवार की सफाई

- 10 दिन के अंतर से सिंचाई करें।
- जुताई कर खरपतवार निकाले।
- पौधों की लाइनों के मध्य खाली स्थान पर टमाटर, प्याज, लहसुन, मटर आदि की बुवाई करें।

11 नवम्बर (कार्तिक-मार्गशीर्ष)

गुड़ाई का कार्य

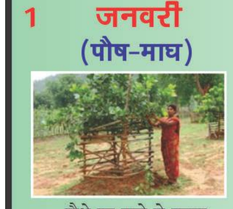

- पुराने बगीचे में मिली-बग कीट की रोकथाम हेतु प्रति पौधा 250 ग्राम मिथाइल पैराथियोन (MP) पाउडर डालकर गुड़ाई करें।
- खाली स्थान पर सब्जी लगाने की तैयारी करें।
- 20 दिन के अंतराल मे सिंचाई करें।

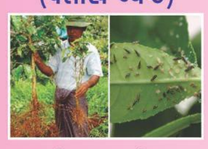

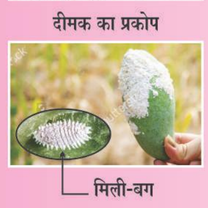

12 दिसम्बर (मार्गशीर्ष-पौष)

टंड से बचाव

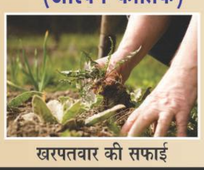

- नये पौधो के उत्तरी तथा पश्चिमी भाग पर घास लगाकर टंड से बचाव करें।

सौजन्य : TDF, नाबार्ड, जयपुर ● प्रकाशक : गायत्री सेवा संस्थान, उदयपुर